भारतीय साक्ष्य अधिनियम 2023

माध्यमिक कक्षा 6 से 8 तक के
विद्यार्थियों के लिए

जुलाई 2025

आषाढ़ 1947

PD 1H BS

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2025

सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंदो मार्ग, नई दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशन प्रभाग में प्रकाशित।

भारतीय साक्ष्य अधिनियम 2023

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

EXTRAORDINARY
PART II — Section 1
PUBLISHED BY AUTHORITY

MINISTRY OF LAW AND JUSTICE
(Legislative Department)

THE BHARATIYA SAKSHYA ADHINIYAM, 2023

An Act to consolidate and to provide for general rules and principles of evidence for fair trial.

माध्यमिक कक्षा 6 से 8 तक के
विद्यार्थियों के लिए

विद्ययाऽमृतमश्नुते
एन सी ई आर टी
NCERT
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

भारतीय साक्ष्य अधिनियम 2023

सीखने के प्रतिफल

इस मॉड्यूल को पढ़ने के बाद, आप निम्न कार्य कर सकेंगे—

- साक्ष्य के बारे में सामान्य कानूनों और भारतीय न्यायालयों में इसकी स्वीकार्यता को समझना।
- विभिन्न प्रकार के साक्ष्यों की पहचान करना और उनमें भेद करना।
- वास्तविक जीवन के परिदृश्यों में स्वयं के संरक्षण के लिए भारतीय साक्ष्य अधिनियम के कुछ प्रावधानों का उपयोग कैसे किया जाए?
- कानूनों की समझ विकसित करना और रचनात्मक एवं आलोचनात्मक रूप से कानूनों के विश्लेषण के लिए जागरूक नागरिक बनना।
- कानूनी तर्क कौशल बढ़ाना।

परिचय

आप सभी ने भारतीय संविधान की प्रस्तावना तो पढ़ी ही होगी, जो आपकी पाठ्यपुस्तकों में सम्मिलित है और जिसमें 'न्याय' की एक आवश्यक घटक के रूप में चर्चा की गई है। संविधान, न्यायालय के माध्यम से न्याय के प्रशासन को सुनिश्चित करता है, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि हमारे राष्ट्र के लोगों को न्याय प्राप्त हो। न्यायपालिका अनेक अधिनियमों और कानूनों को मान्य ठहराती है और निर्णय देने से पहले सभी उपलब्ध साक्ष्यों पर विचार करती है।

हमारे जीवन के प्रत्येक पहलू में तकनीकी नवाचार और विज्ञान के उपयोग ने उस विश्व को महत्वपूर्ण रूप से बदल दिया है, जिसमें हम रहते हैं। इस बारे में, एक ऐसी रूपरेखा तैयार करना आवश्यक था, जो नए प्रकार के साक्ष्यों को स्वीकार कर सके, क्योंकि भारतीय साक्ष्य अधिनियम, 1872 (इसके बाद इस अधिनियम का आई.ई.ए. के नाम से उल्लेख किया गया है) डिजिटल और इलेक्ट्रॉनिक साक्ष्यों की बढ़ती संख्या को पर्याप्त रूप से संभाल नहीं पाया। आई.ई.ए. में अधिकांश प्रावधान ब्रिटिश काल के दौरान अपनाए गए थे और इसलिए वे अब अप्रचलित हैं। सामाजिक परिवर्तनों और न्यायिक प्रणाली के विकास के कारण साक्ष्य के लिए अधिक आधुनिक एवं लचीला

दृष्टिकोण आवश्यक था। इन स्थितियों के परिणामस्वरूप भारतीय साक्ष्य अधिनियम 2023 (इसके बाद इसका बी.एस.ए. 2023 के नाम से उल्लेख किया गया है) को अधिनियमित किया गया।

भारतीय साक्ष्य अधिनियम 2023 (बी.एस.ए., 2023) का व्यापक उद्देश्य पिछले अधिनियम द्वारा छोड़े गए अंतरालों को भरकर और आधुनिक कानूनी प्रैक्टिस की उभरती आवश्यकताओं के साथ समायोजन करके, भारत की साक्ष्य रूपरेखा में सुधार और आधुनिकीकरण करना है। भारतीय साक्ष्य अधिनियम के अध्ययन से आपको कानूनी सूचना मिलती है और आपको विभिन्न कानूनी स्थितियों में वास्तविक विश्व के उपयोग के लिए तैयार करती है।

आई.ई.ए., 1872 में ऐसी शब्दावली और संरचनाएँ हो सकती हैं, जिन्हें अभी समझना कठिन है। परिभाषाओं को स्पष्ट करना और कानून की पहुँच में सुधार करना नए कानून का लक्ष्य है। आधुनिकीकरण कानूनी प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित और छोटा करने, इस पर समय कम करने और कानूनी प्रणाली की प्रभावशीलता में सुधार का प्रयास करता है।

रजिस्ट्री सं॰ डी॰ एल॰—(एन)04/0007/2003—23 REGISTERED NO. DL—(N)04/0007/2003—23

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

सी.जी.-डी.एल.-अ.-25122023-250882
CG-DL-E-25122023-250882

असाधारण
EXTRAORDINARY
भाग II — खण्ड 1
PART II — Section 1
प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं॰ 55] नई दिल्ली, सोमवार, दिसम्बर 25, 2023/ पौष 4, 1945 (शक)
No. 55] NEW DELHI, MONDAY, DECEMBER 25, 2023/PAUSHA 4, 1945 (SAKA)

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके।
Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation.

MINISTRY OF LAW AND JUSTICE
(Legislative Department)

New Delhi, the 25th December, 2023/*Pausha* 4, 1945 (*Saka*)

The following Act of Parliament received the assent of the President on the 25th December, 2023 and is hereby published for general information:—

THE BHARATIYA SAKSHYA ADHINIYAM, 2023
No. 47 of 2023

[25*th December,* 2023.]

An Act to consolidate and to provide for general rules and principles of evidence for fair trial.

स्रोत— *https://www.mha.gov.in/sites/ default/ files/250882_english_01042024.pdf*

भारतीय साक्ष्य अधिनियम (2023)

Sakshya (in Hindi)— प्रमाण

(in English)— Evidence

Adhiniyam (in Hindi)— विधान के अंतर्गत बनाया गया नियम

(in English)— Act

कोई भी अधिनियम एक विधेयक है, जिसे लोकसभा एवं राज्यसभा द्वारा पारित किया गया है और भारत के राष्ट्रपति द्वारा स्वीकृत किया गया है।

आइए, नीचे दी गई तालिका के माध्यम से आपराधिक कानूनों की अवधारणा को समझते हैं।

30 जून 2024 तक के पुराने कानून	1 जुलाई 2024 से लागू नए कानून	अधिनियम के मूल उद्देश्य
भारतीय दंड संहिता (आई.पी.सी.), 1860	भारतीय न्याय संहिता (2023)	इस अधिनियम का उद्देश्य भारत के लिए एक सामान्य दंड संहिता प्रदान करना है। यह हमें बताता है कि किस प्रकार की कार्रवाई को 'अपराध' कहा जा सकता है।

दंड प्रक्रिया संहिता (सी-आर.पी.सी.) 1973	भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता (2023)	यह एक प्रक्रियात्मक कानून है। सी-आर.पी.सी. का मुख्य उद्देश्य आपराधिक मामलों की निष्पक्ष एवं न्यायपूर्ण जाँच और सुनवाई सुनिश्चित करना है, साथ ही आरोपियों और पीड़ितों के अधिकारों का संरक्षण करना भी है।
भारतीय साक्ष्य अधिनियम (आई.ई.ए.) 1872	भारतीय साक्ष्य अधिनियम (2023)	इसका प्राथमिक उद्देश्य न्याय प्रशासन में निष्पक्षता, स्पष्टता और दक्षता सुनिश्चित करना है।

Curtains on old IPC, CrPC, Evidence law, new codes come into effect from today

2 THE SECOND PAGE

FROM PAGE ONE

New Sanhitas come into effect today

स्रोत— द इंडियन एक्सप्रेस, सोमवार, 1 जुलाई 2024

कार्यान्वयन की तिथि— 1 जुलाई 2024

प्रतिस्थापित— भारतीय साक्ष्य अधिनियम (1872)

आई.ई.ए. को सर जेम्स फिट्ज़जेम्स स्टीफन ने प्रस्तुत किया था, जो कलकत्ता उच्च न्यायालय में न्यायाधीश थे। यह अधिनियम भारतीय न्यायालयों में न्याय की एकरूपता सुनिश्चित करने के लिए लाया गया है।

कार्यान्वयन का कारण— यह ब्रिटिश शासन के दौरान अधिनियमित किया गया था। इसलिए, यह अधिनियम आधुनिक बनाया जाना था, जिसमें साक्ष्यों की साज-संभाल को प्रतिस्थापित कर इलेक्ट्रॉनिक और डिजिटल रिकॉर्ड को सम्मिलित किया गया।

गतिविधि

- उन पिछले कानूनों का नाम पता करें, जिन्हें भारतीय न्याय संहिता 2023, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता 2023 और भारतीय साक्ष्य अधिनियम 2023 द्वारा प्रतिस्थापित किया गया है।
- भारतीय साक्ष्य अधिनियम 2023 में किए गए प्रमुख परिवर्तनों को नोट करते हुए एक चार्ट तैयार करें।

इससे पहले कि हम भारतीय साक्ष्य अधिनियम 2023 की व्याख्या करें, आपको कुछ महत्वपूर्ण परिभाषाएँ समझनी चाहिए, जिनका प्रायः उपयोग किया जाएगा। उनका नीचे दिए गए बॉक्स में उल्लेख किया गया है।

स्रोत— दिल्ली पुलिस ने 1 जुलाई 2024 को नए आपराधिक कानूनों के लिए जागरूकता पोस्टर प्रदर्शित किया। फोटो क्रेडिट— पी.टी.आई.

कुछ महत्वपूर्ण शब्दावली

- **दस्तावेज**— इलेक्ट्रॉनिक और डिजिटल रिकॉर्ड सहित लिखित या मुद्रित कागज, पत्र, आकृति या चिह्न, जो किसी संबंधित विषय की सूचना या प्रमाण प्रदान करते हैं।
- **साक्ष्य**— तथ्यों या सूचनाओं का संग्रह, यह जाँचने के लिए कि यह सत्य है या असत्य।
- **प्राथमिक साक्ष्य**— मूल दस्तावेज या सामग्री, जो निरीक्षण के लिए न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत किए जाते हैं।
- **द्वितीयक साक्ष्य**— यह मूल दस्तावेजों या सामग्रियों की प्रतियों या प्रतिस्थापनों को संदर्भित करते हैं, जो विशिष्ट परिस्थितियों में न्यायालय में स्वीकार्य हैं।
- **न्यायालय**— इसमें मध्यस्थों, साक्ष्य लेने के लिए कानूनी रूप से अधिकृत व्यक्तियों को छोड़कर सभी न्यायाधीश और मजिस्ट्रेट और सभी व्यक्ति सम्मिलित हैं।
- **मुद्दे में तथ्य**— इसका अर्थ है और इसमें कोई भी वह तथ्य सम्मिलित है, जिससे या तो स्वयं या अन्य तथ्यों के संबंध में, किसी भी अधिकार, दायित्व या अक्षमता की विद्यमानता, अविद्यमानता, प्रकृति या सीमा, किसी भी मुकदमे या कार्यवाही में दावा या अस्वीकार किया गया हो, आवश्यक रूप से पालन करता है।
- **धमकाना**— धमकाने को एक आक्रामक शारीरिक या सामाजिक व्यवहार के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जो जान-बूझकर और बार-बार किसी व्यक्ति या समूह द्वारा दूसरे व्यक्ति के प्रति किया जाता है, जिससे नुकसान या असुविधा होती है।
- **साइबर तरीकों से धमकाना (साइबर-बुलिंग)**— सोशल मीडिया, टेक्स्टिंग, एस.एम.एस., ऐप, गेमिंग और शिक्षण प्लेटफॉर्म के माध्यम से सेलफोन, कंप्यूटर और टैबलेट जैसे डिजिटल उपकरणों के माध्यम से होने वाली बदमाशी।
- **साइबर अपराध**— साइबर अपराध एक डिजिटल डिवाइस (उपकरण) के माध्यम से किया गया अपराध है।
- **इलेक्ट्रॉनिक/डिजिटल रिकॉर्ड**— ईमेल, सर्वर लॉग्स, कंप्यूटर, लैपटॉप या स्मार्ट फोन पर दस्तावेज, वेबसाइट, स्थान संबंधी साक्ष्य और डिजिटल डिवाइस पर संग्रहीत वॉयस मेल संदेशों पर इलेक्ट्रॉनिक रिकॉर्ड।

भारतीय साक्ष्य अधिनियम (2023) का महत्व

यह अधिनियम न्यायपालिका को साक्ष्य एकत्र करने और उसे दर्ज करने के लिए एकीकृत, व्यापक दिशा-निर्देश देता है, जो न्यायपूर्ण कार्यवाही में प्रशासन को सहायता करता है। यह अधिनियम न्यायालय के समक्ष साक्ष्य एकत्र करने और प्रस्तुत करने की प्रक्रियाओं को निर्धारित करता है, चाहे वह प्राथमिक हो या द्वितीयक आदि। साक्ष्य कथित तथ्यों को स्पष्ट करेंगे और न्याय की त्वरित और दक्षतापूर्ण प्रदायगी में सहायता करेंगे।

यह कानून ऐसे प्रश्नों के लिए सरल तरीके प्रदान करता है, जैसे कि साक्ष्य एकत्र करने की अनुमति किसे है, इसे कैसे दर्ज किया जाना चाहिए, इसे न्यायालय में कैसे प्रस्तुत किया जाना चाहिए और यह स्वीकार्य है या नहीं।

भारत ने अतीत में अवयस्कों पर साइबर अपराधों के कई उदाहरणों का अनुभव किया है। ऐसे में, इससे पहले कि हम भारतीय साक्ष्य अधिनियम 2023 की मुख्य विशेषताओं और इसकी समझ से युवाओं को कैसे मदद मिलेगी, यह आवश्यक है कि इस नए आपराधिक कानून के कार्यान्वयन से पहले हुए कुछ उदाहरणों की जाँच के बारे में विस्तार से जानें।

भारतीय साक्ष्य अधिनियम की मुख्य विशेषताएँ

तकनीकी प्रगति के युग ने साक्ष्यों के संग्रह, संरक्षण और प्रस्तुति को बेहद प्रभावित किया है। इस अधिनियम को पारित करते समय हम जिस नए डिजिटल वातावरण में रह रहे हैं, उसे ध्यान में रखा गया है। भारतीय साक्ष्य अधिनियम 2023 की कुछ मुख्य बातें निम्नलिखित हैं—

- 2023 के इस अधिनियम में 4 भाग, 12 अध्याय, एक अनुसूची है और इसमें 170 धाराएँ सम्मिलित हैं।
- यह अधिनियम भारतीय साक्ष्य अधिनियम, 1872 का स्थान लेता है।
- 'एक्ट' को 'अधिनियम' से प्रतिस्थापित किया गया है।
- भारतीय साक्ष्य अधिनियम 1872 (आई.ई.ए.) के अधिकार क्षेत्र में भारत का पूरा क्षेत्र सम्मिलित था; हालाँकि, भारतीय साक्ष्य अधिनियम 2023 (बी.एस.ए.) में यह क्षेत्रीय प्रावधान नहीं है।
- 'दस्तावेज' की परिभाषा में अब ईमेल, सर्वर लॉग्स, लैपटॉप, मोबाइल, टैबलेट, क्लाउड, वॉयस मैसेज या किसी भी डिजिटल डिवाइस आदि पर विद्यमान इलेक्ट्रॉनिक या डिजिटल रिकॉर्ड सम्मिलित हैं। यह परिभाषा दस्तावेजों के दायरे (स्कोप) को कागज-आधारित डेटा से इलेक्ट्रॉनिक रिकॉर्ड तक विस्तारित करती है।

- इसी तरह, इलेक्ट्रॉनिक सूचना को सम्मिलित करने के लिए 'साक्ष्य' की परिभाषा का विस्तार किया गया है।
- इसी तरह, प्राथमिक साक्ष्य (धारा 57 के तहत) और द्वितीयक साक्ष्य (धारा 58 के तहत) के दायरे को डिजिटल या इलेक्ट्रॉनिक रिकॉर्ड और फाइलों को सम्मिलित करने के लिए बढ़ाया गया है।
- नए इलेक्ट्रॉनिक साक्ष्य पारंपरिक कागजी रिकॉर्ड या दस्तावेजों के समान ही साक्ष्य का महत्व रखेंगे। इलेक्ट्रॉनिक साक्ष्य का कानूनी प्रभाव, प्रवर्तनीयता और वैधता गैर-डिजिटल रिकॉर्ड के समान ही होगी।
- बैरिस्टर, प्लीडर (अभिवक्ता), अटॉर्नी (न्यायवादी) या वकील जैसे शब्दों को 'एडवोकेट' (अधिवक्ता) से प्रतिस्थापित किया गया है।

न्याय को लागू करने के उद्देश्य से, इस नए आपराधिक कानून का उद्देश्य साक्ष्य को समझने और उसके मूल्यांकन के तरीके में महत्वपूर्ण परिवर्तन करना है। इस नियम को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए हमारे जीवन, विशेषकर बच्चों पर प्रौद्योगिकी (टेक्नोलॉजी) के बढ़ते प्रभाव को देखते हुए कई महत्वपूर्ण एवं नए संशोधन किए गए हैं। सभी नए परिवर्धनों में से सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तन 'दस्तावेज' की नई परिभाषा में है। डिजिटल और इलेक्ट्रॉनिक रिकॉर्डिंग को भी इसके द्वारा प्रमाण के तौर पर स्वीकार किया जाता है।

इसके परिणामस्वरूप, यह उन बच्चों की रक्षा करता है, जो डिजिटल मीडिया के माध्यम से हिंसा के शिकार हो सकते हैं। यह बच्चों को उनके कानूनी अधिकारों के बारे में सूचित करेगा। यदि वे पीड़ित बन जाते हैं तो उन्हें किसी भी अवैध वेब-आधारित गतिविधि में भाग लेने के खतरों के बारे में चेतावनी देगा।

डिजिटल विश्व – वरदान और अभिशाप

वर्तमान विश्व में, हम प्रौद्योगिकी के बिना अपने भौतिक स्थान या जीवन की कल्पना नहीं कर सकते। प्रौद्योगिकी हमें मोबाइल फोन, लैपटॉप, डेस्कटॉप, टैबलेट, डिवाइस और गैजेट के रूप में घेरे हुए है। ये डिवाइस हमें फोन कॉल, वीडियो कॉल, मेल, चैट, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म, ऐप आदि के माध्यम से मनुष्यों से जुड़ने देते हैं, जिससे हमारे लिए एक डिजिटल विश्व बनता है, जिसे वर्चुअल विश्व भी कहा जाता है। हम अपनी कुर्सी से उठे बिना और बस एक बटन के क्लिक से इस डिजिटल विश्व तक पहुँच सकते हैं। वर्चुअल विश्व के फायदे के साथ-साथ नुकसान भी हैं। नीचे सारणीबद्ध रूप में डिजिटल प्रौद्योगिकी के फायदे और नुकसान बताए गए हैं।

डिजिटल प्रौद्योगिकी के लाभ और हानियाँ	
लाभ	**हानियाँ**
यह अधिगम (सीखने) और सूचना (जानकारी) के लिए एक उपकरण के रूप में कार्य करती है।	परिवार के साथ पर्याप्त समय न बिताना और असामाजिक बन जाना।
यह अधिगम को रोचक और अंतर्क्रियात्मक (इंटरैक्टिव) बनाती है।	किसी भी शारीरिक गतिविधि में सम्मिलित न होना, जिससे वजन बढ़ना, ध्यान अवधि में कमी आना।
यहाँ तक कि इसके माध्यम से सबसे वंचित और हाशिए पर पड़े बच्चों को भी सूचना और ज्ञान तक पहुँच मिल सकती है।	फोन आदि के अत्यधिक उपयोग से नींद की गुणवत्ता घटना, अनिद्रा हो जाना।
यह रचनात्मकता और कल्पना के एक माध्यम के रूप में कार्य करती है।	डिजिटल फ्रॉड, साइबर धमकी, फिशिंग, साइबर स्टॉकिंग, हैकिंग, पहचान की चोरी और बाल शोषण जैसी हानिकारक गतिविधियों के संपर्क में आना।

नीचे उल्लिखित एक केस स्टडी है। इस केस पर ध्यान दें और बॉक्स में दिए गए प्रश्नों के उत्तर देने का प्रयास करें।

केस स्टडी — द ब्लू-व्हेल गेम

द 'गेम'

ब्लू-व्हेल चुनौती क्या है?

यह एक कथित गेम है, जिसमें इसे संचालित करने वाले लोगों का समूह संभावित लक्ष्य, आमतौर पर सोशल मीडिया पर कमजोर किशोरों को ढूँढ़ता है और उन्हें 50 कार्यों की एक सूची देता है, जिसके अंत में पीड़ित स्वयं को मार डालते हैं। इस गेम की शुरुआत रूस से हुई है और यह अवसाद से जूझ रहे उपयोगकर्ताओं या गेम के पीछे के लोगों की सक्रिय रूप से खोज करने की कोशिश करने वालों को अपना शिकार बनाता है।

कैसे होते हैं टास्क?

ये सांसारिक से लेकर, जैसे कि बाँह पर टैटू बनवाना, विचित्र तक हो सकते हैं, जैसे कि शरीर के अंगों पर कट लगाना और पीड़ित को भेजे गए संगीत को सुनने के लिए अजीब समय पर जागना। कार्यों को रिकॉर्ड किया जाना चाहिए और जो कोई भी धोखा देने की कोशिश करेगा, उसे आगे के कार्य मिलने बंद हो जाएँगे।

क्या यह वास्तव में विद्यमान है?

हालाँकि इस गेम की विद्यमानता की पुष्टि नहीं हुई है, लेकिन मॉस्को पुलिस ने जून में कथित मास्टरमाइंड में से एक को गिरफ्तार किया था। 21 वर्षीय फिलिप बुदेइकिन ने बाद में किशोरों को आत्महत्या के लिए उकसाने का दोषी पाया। यह चुनौती कथित तौर पर स्पेन, पुर्तगाल, यूक्रेन, ब्रिटेन, फ्रांस, भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे देशों में फैल गई है।

कौन 'खेल' सकता है?

मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, आप गेम खेलने के लिए साइन-अप नहीं कर सकते। आपको आमंत्रित किया जाना चाहिए।

पॉप कल्चर लिंक

ब्लू-व्हेल चैलेंज सबसे हालिया सोशल मीडिया परिघटना है, जिसने **नेटफ्लिक्स के 13 रीजन** व्हाई की रिलीज के बाद आक्रोश को और बढ़ा दिया है। इस शो, जो एक परेशान किशोरी और उसके आत्महत्या करने के कारणों से संबंधित है, ने चरम प्रतिक्रियाएँ आकर्षित की हैं।

स्रोत— *https://www.thehindu.com/news/cities/bangalore/blue- whale-effect helpline-sees-rise-in-calls-from-worried- parents/article19494206.ece*

समाचार-पत्र की कतरन के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें।

1. इस खेल की शुरुआत कहाँ से हुई और इसका आविष्कार किसने किया?
2. बच्चों को कौन-कौन से काम (टास्क) दिए जाते हैं?
3. अब जबकि साक्ष्य शब्द की व्याख्या हो चुकी है, तो आप किस तरह के साक्ष्य की पहचान कर सकते हैं?
4. ऐसे खेल खेलने के क्या जोखिम हैं?
5. क्या आप कुछ ऐसे इनडोर गेम की पहचान सकते हैं, जिन्हें आप अपने परिवार के साथ खेल सकते हैं? उनका चित्र बनाएँ।

कक्षा के लिए समूह गतिविधि

- **साक्ष्य खोज अभियान**— कोई खोज अभियान (कहानी पर आधारित) तैयार करें, जहाँ विद्यार्थियों को विभिन्न प्रकार के साक्ष्यों के उदाहरण ढूँढ़ने होंगे। उदाहरण के लिए, वृत्तचित्र, प्रशंसापत्र, फोटो आदि।
- **वाद-विवाद**— साक्ष्य के पीछे तर्क की आलोचनात्मक सोच और समझ को प्रोत्साहित करने के लिए बी.एस.ए. के प्रावधानों पर विद्यार्थी वाद-विवाद आयोजित करें।
- **न्यायालय का अनुभव**— विद्यार्थियों को अभियोजक, बचाव पक्ष के वकील और न्यायाधीश जैसी अलग-अलग भूमिकाएँ सौंपें और उन्हें विशिष्ट केस परिदृश्य दें, जहाँ वे साक्ष्य प्रस्तुत करेंगे और उसी के आधार पर तर्क प्रस्तुत करेंगे।
- **अतिथि वक्ता सत्र**— बी.एस.ए. के व्यावहारिक निहितार्थों के बारे में बोलने के लिए एक कानूनी पेशेवर को आमंत्रित करें।

निष्कर्ष

तेजी से आगे बढ़ने वाले वर्तमान विश्व में, जहाँ हर सूचना एक बटन के क्लिक पर उपलब्ध है, यह बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है कि बच्चों को डिजिटल विश्व से प्राप्त सूचना के माध्यम से जो कुछ भी वे देख रहे हैं, उससे सुरक्षित रखा जाए। कोविड-19 के युग के बाद, डिजिटल विश्व का प्रभाव कई गुना बढ़ गया है, जिससे वे साइबर अपराध के प्रति और भी अधिक संवेदनशील हो गए हैं। इस दिशा में, नए आपराधिक कानूनों, विशेष रूप से भारतीय साक्ष्य अधिनियम 2023 की शुरुआत एक महत्वपूर्ण कदम रहा है। इस कानून ने दस्तावेज की परिभाषा का विस्तार किया है और अब इसमें डिजिटल और इलेक्ट्रॉनिक रिकॉर्ड्स भी सम्मिलित हैं। इस प्रावधान का उद्देश्य डिजिटल युग में कानूनी वातावरण की कठिनाइयों और पेचीदगियों पर ध्यान देना है। इसमें प्रौद्योगिकी संबंधी घटनाक्रम को ध्यान में रखा गया है, वर्तमान कानूनी सुधारों का पालन करता है और कुछ समय से विद्यमान प्रणालीगत समस्याओं का समाधान करता है। यह साक्ष्य एकत्र करने, रिकॉर्ड करने और प्रस्तुत करने की प्रक्रिया को सुव्यवस्थित करके प्रक्रियागत जटिलताओं को कम करता है। यह पुलिस के लिए अवयस्कों से साक्ष्य रिकॉर्ड करना और उसी के अनुरूप उनकी सुरक्षा करने को आसान बनाता है। इस तरह के जोड़ निश्चित रूप से बच्चों की सुरक्षा सुनिश्चित करेंगे।

माता-पिता के लिए संदेश

2023 में तीन नए आपराधिक कानून लागू होने से आपको बहुत प्रसन्नता होगी। सभी कानून एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। हालांकि, भारतीय साक्ष्य अधिनियम 2023 आपके बच्चे के लिए मददगार हो सकता है। डिजिटल बूम की इस विश्व में, माता-पिता के लिए यह सुनिश्चित करना बहुत महत्वपूर्ण है कि आपके बच्चे डिजिटल सूचना और गैजेट का विवेकपूर्ण तरीके से उपयोग करें। आप सभी को सावधान रहना चाहिए और सुनिश्चित करना चाहिए कि इस तरह की बातचीत से उन्हें कोई नुकसान न हो। हमारा प्राथमिक उद्देश्य अपने बच्चों को सुरक्षित रखना होना चाहिए।

बच्चे हमारे देश के भविष्य हैं और यह सुनिश्चित करना हमारा कर्तव्य है कि हम अपने पीछे एक सुरक्षित देश और एक ऐसी विरासत छोड़ें, जहाँ वे फल-फूल सकें और वैश्विक नागरिक बन सकें। भारतीय साक्ष्य अधिनियम 2023 जैसे कानून हमारे बच्चों के लिए इस व्यावहारिक वातावरण के निर्माण को सुनिश्चित करने की दिशा में एक कदम और आगे बढ़ेंगे।

संदर्भ

वेबसाइट्स

https://ncpcr.gov.in/uploads/1702548255657ad31ff39b4_preventing-bullying-and-cyberbullying guidelines-for-schools.pdf

https://rlsa.gov.in/pdf/Crime%20Against%20%20Children-RSLSA.pdf

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING